गांधीजी और गोवध

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक: किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक: मगनभाओी देसाओ अंक २६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २५ अगस्त, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

खतरनाक कदम

अुत्तर प्रदेशके प्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ता बाबा राघवदासके अलाहाबादकी हिन्दी 'अमृत पत्रिका' के ता० २९-७-'५१ के अंकमें प्रकाशित अेक लेखका भाग नीचे देता हूं:

"स्वर्गीय सरदार पटेलने भारतके प्रसिद्ध अैतिहासिक पुण्यस्थान श्री सोमनाथजीका जीर्णोद्धार करके यह बता दिया कि प्राचीन पुण्यस्थानोंका अुद्धार स्वतंत्र भारतमें अवश्य होगा। वे हमें सक्रिय आश्वासन दे गये हैं। पूज्य बापूजीने भारतके स्वतंत्र होने पर जो मस्जिदें हिन्दुओं द्वारा अपहृत थीं, अुन मस्जिदोंको मुसलमानोंको वापिस दिलाकर हमें यह आशा दिलाओी कि मुस्लिम शासनकालमें हिन्दुओंके जो देवालय अपवित्र कर दिये गये थे, या मुसलमानों द्वारा अधिकृत कर लिये गये थे, अुनका भी अुद्धार होगा। ...

"हम यहां पर यह भी नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि अुत्तर प्रदेशके तीन प्रमुख स्थान काशी, अयोध्या और मथुराके साथ भारतीय जनता और अुसके सांस्कृतिक जीवनका गहरा संबंध है। श्री राम, श्री कृष्ण और श्री विश्वनाथ भारतके हृदय सम्राट् हैं। घर-घर अिनकी चर्चा है। श्री सोमनाथजीके बारेमें भारतीय जनता बहुत कम जानकारी रखती है, अिसलिओ भी अिन स्थानोंका जीर्णोद्धार अपना अेक विशेष महत्त्व रखता है।

"यहां कभी-कभी यह बात कही जाती है कि यह साम्प्रदायिक प्रश्न है। पर अितिहास अिस बातका साक्षी है कि यह साम्प्रदायिक प्रश्न नहीं है। यह विजेता और विजितका प्रश्न है। अगर यूनियन जैक (अंग्रेजी झंडा) जा सकता है और अुसके स्थान पर तिरंगा झंडा आ सकता है; अगर वाअिसरॉयके स्थानको राष्ट्रपति सुशोभित कर सकते हैं, तो अिन गौरवमण्डित पुण्य स्थलोंका जीर्णोद्धार भी हो सकता है। अगर भारत सरकारकी संरक्षतामें अेक हजार वर्ष पूर्व विजेता द्वारा नष्ट किये गये सोमनाथजीके मंदिरका अुद्धार संभव है, तो फिर अुत्तर प्रदेशके अिन तीनों स्थानोंके जीर्णोद्धारमें रुकावट क्यों कर होगी?

"प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। अुसको जितना शीघ्र हल किया जाय, अुतना ही अच्छा है। हमें श्री सोमनाथजीके मंदिरका जीर्णोद्धार हुआ देखकर जितनी प्रसन्नता होती है, अुतनी ही अिन महान् तीर्थस्थानोंकी अवहेलना देखकर बेचैनी होती है।

"चुनाव आनेवाला है। करोड़ों स्त्री-पुरुषको न्यायका आश्वासन देना है। और हम यह पूर्ण विश्वास करते हैं कि अिन तीन महान अैतिहासिक स्थानोंका पूर्ववत् सम्मान होते देख भारतीय जनता न्यायमें अधिक विश्वास करेगी।" ...

बाबा राघवदासने यह स्पष्ट नहीं किया है कि वे काशी, अयोध्या और मथुरामें ठीक क्या करना चाहते हैं। वे किन मंदिरोंका अुद्धार चाहते हैं? क्या अुनका अिशारा यह है कि काशीमें औरंगजेबकी बनवायी हुओी बड़ी मस्जिद, या अयोध्यामें हनुमानगढ़ी, या मथुरामें अिसी तरहकी मस्जिदोंको दुबारा, जैसा कि अयोध्यामें करनेकी कोशिश हुओी है, मंदिरोंमें बदल देना चाहिये?

अिस सिलसिलेमें गांधीजी और सरदारका नाम लेना बिलकुल ही गलत था। सोमनाथका मंदिर खंडहरकी हालतमें था और हिन्दुओंके अधिकारमें था। वहां कोओी मस्जिद नहीं थी, और न किसी मुसलमानने अुस जगहके अधिकारका ही दावा किया था। कुछ बड़े-बड़े हिन्दुओंने, जिनका काफी प्रभाव था, अुसका पुनर्निर्माण करना चाहा। अिसका अुन्हें पूरा अधिकार था। अिन हिन्दुओंमें से सरदार जैसे कुछ केन्द्र या प्रादेशिक राज्योंके मंत्री भी थे। चूंकि जूनागढ़ राज्य भारत-संघमें शामिल हुआ और अुसीके साथ अिस कामका आरम्भ हुआ, और चूंकि सोमनाथके अितिहासमें साम्प्रदायिक अनबनकी पुरानी याद जुड़ी हुओी है, अिसलिओ अिसमें गलतफहमी पैदा हो सकती थी और हुओी भी। यह कहा जा सकता है कि सरकारसे संबंध रखनेवाले हिन्दू नेताओंने अिसमें भाग न लिया होता, तो अच्छा होता। लेकिन अैसा नहीं कहा जा सकता कि अुन्हें अैसा हिस्सा लेनेका हक नहीं था। गांधीजीने अिसमें जो हिस्सा लिया, वह यह समझनेके लिओ ही कि मंदिरके पुनर्निर्माणका यह काम सरकारी खर्च पर न हो। ता० ७ दिसम्बर, '४७ के 'हरिजनसेवक' में अुनका ता० २८ नवम्बर, '४७ का प्रार्थना-प्रवचन प्रकट हुआ है, अुसमें अिस विषयका जिक्र है। अुसे मैं यहां अुद्धृत करता हूं:

"अेक भाओी लिखते हैं कि सोमनाथके मंदिरका जो जीर्णोद्धार होनेवाला है, अुसमें सरकारी पैसा नहीं लगाना चाहिये। मुझे बताया गया है कि शामलदास गांधीने आरजी हुकूमत बनाओी है और अिस कामके लिओ जनतासे अिकट्ठे किये हुओ पैसेमें से ५० हजार रुपये देना स्वीकार किया है। जामसाहब अेक लाख देनेवाले हैं। सरदार पटेलने कहा कि सरदार अैसा नहीं है कि जो चीज हिन्दुओंके लिओ ही है, अुसके लिओ सरकारी खजानेसे पैसा निकाले। हम सब हिन्दी हैं, मगर धर्म हमारी अपनी चीज है। सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिओ हिन्दू जो पैसा खुशीसे देंगे, अुसीसे काम चल जायगा। पैसा नहीं मिलेगा, तो वह काम पड़ा रहेगा। मैं यह सुनकर खुश हुआ।"

मेरे देखनेमें अभी तक कोओी अैसी चीज नहीं आओी, जिससे प्रगट होता हो कि अिस योजनामें अुन्होंने कोओी व्यक्तिगत दिलचस्पी ली थी। सच तो यह है कि अुनका मन अुस तरफ जा ही नहीं सकता था। हम सब जानते हैं कि वे अुस समय साम्प्रदायिक अेकताके निर्माणमें 'करूंगा या मरूंगा' की भावनासे लगे हुओ थे, और अैसी किसी चीजका खयाल ही नहीं कर सकते थे, जिससे कुछ भी गलतफहमी पैदा होनेका डर हो।

www.vinoba.in

बाबा राघवदास प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्ता हैं और अुत्तर प्रदेशकी विधान सभा तथा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके प्रमुख सदस्य हैं। साथ ही प्रभावशाली वक्ता और अेक मठके महंत भी हैं। फलतः शासनके अधिकारियों पर अुनका बड़ा प्रभाव है, और अुससे भी ज्यादा प्रभाव हमारी भोली जनता पर है। अयोध्याकी बाबरी मस्जिदके बारेमें जो झगड़ा हुआ, अुसमें अुनका हाथ था। लेकिन अुनका यह कदम अुससे भी ज्यादा खतरनाक है। अपने अिस सुझावको तुलना अुन्होंने सन् १९४७-'४८ में गांधीजीने दिल्लीके हिन्दुओंसे मुसलमानोंको अुनकी मस्जिदें लौटानेकी बात कही थी, अुसके साथ की है। बाबाजी यह खूब जानते हैं कि वह बात बिलकुल अलग तरहकी थी। अुसमें गड़े पत्थर अुखाड़नेकी, अेक पुराना और भूला हुआ झगड़ा अुभाड़नेकी कोशिश नहीं थी। हिंसा और क्रूरतासे भरी वह गांधीजीकी आंखोंके सामने हुअी अेक वर्तमान घटना थी, और जिन लोगोंसे अुन्होंने ये मस्जिदें लौटानेको कहा, वे ही अिसके लिअे जिम्मेदार थे। अुसमें कोअी दो सौ वर्ष पुराना झगड़ा फिरसे शुरू नहीं किया जा रहा था।

बाबा राघवदासके बारेमें मुझे कड़े शब्दोंका अुपयोग करना पड़ रहा है, अिसका मुझे खेद है। क्योंकि अुनके प्रति मुझे काफी व्यक्तिगत आदर रहा है। लेकिन मैं यह कहनेके लिअे मजबूर हूं कि अुनकी मनोवृत्ति बहुत ज्यादा साम्प्रदायिक है। और हमारी भोली जनतामें साम्प्रदायिक जहर फैलानेवाले वे अकेले कांग्रेसी नहीं हैं। खासकर अुत्तर-प्रदेशमें अिस किस्मके अनेक लोग हैं। अेकने तो श्री महादेव देसाअी और गांधीजीके नाम पर क्रमानुसार जाली चिट्ठी और लेख भी तैयार करनेकी ढिठाअी की है। अगर कांग्रेस, जैसा कि वह दावा करती है, हिन्दुओंकी साम्प्रदायिक संस्था नहीं है, तो मेरी समझमें नहीं आता कि अैसे लोग अुसमें कैसे रह सकते हैं। क्या अुसे यह महसूस हुआ है कि यह अेक गम्भीर सवाल है और अिसके कारण देशमें फिरसे साम्प्रदायिक अुपद्रवोंकी आग भड़क सकती है और खून बह सकता है? कांग्रेस दावा करती है कि वही अेक राजनीतिक संस्था है, जो देशका काम चला सकती है। सवाल अुठता है कि वह किस प्रकारका काम चलानेवाली है? मैं कांग्रेसका शत्रु नहीं हूं। और यद्यपि मैं अुसका नियमानुसार सदस्य नहीं रहा हूं, लेकिन आजादीके लिअे हुअे अुसके बड़े-बड़े आन्दोलनोंमें मैंने अुसकी सेवा की है। लेकिन अगर वह सही रास्तेसे भटक रही है, तो मैं अुसका साथ नहीं दे सकता, और न मुझे देना चाहिये।

वर्धा, ११-८-'५१ **कि० घ० मशरूवाला**

(अंग्रेजीसे)

पण्णै आश्रमकी रिपोर्ट – १

[पण्णै आश्रम, सेलडोह, पो० सिंदी (जी० आअी० पी०) में क्या चल रहा है, अिसकी जानकारी मांगनेवाले कअी पत्र हमारे पास आते रहते हैं। अिस नये प्रयोगके बारेमें लोगोंमें कुतूहल जाग्रत हो, यह स्वाभाविक ही है। पर जब तक प्रत्यक्ष काम शुरू न हुआ हो, तब तक अुसकी क्या जानकारी दी जा सकेगी? हां, यह हो सकता है कि वहांके रोजाना कार्यक्रमका चिट्ठा हम दे सकते हैं। अुस परसे आश्रमका असली मकसद क्या है, अिसका पाठक अंदाज लगा सकते हैं। अुससे यदि कुछ मतलबकी बात निकलती हो, तो अन्य रचनात्मक कार्यकर्ता अुससे कुछ सबक सीखें। अुसमें यदि गलतियां हो तो हम चाहेंगे कि पाठक अुनको बतायें और अपनी सूचनायें पेश करें। अिस हेतुसे हमने अेक रोजनामचा तैयार किया है, जो हमारे दैनिक कार्यक्रमकी रिपोर्ट पेश किया करेगा। अुस रिपोर्टको हम अिन स्तंभोंमें प्राप्त स्थलके अनुसार समय-समय पर देते रहेंगे।

— जो० कॉ० कु०]

१

आपको शायद याद होगा कि पण्णै आश्रमका अुद्घाटन ता० १८ मअीको आचार्य जे० बी० कृपलानीने किया था। अिस आश्रमका मकसद है ग्रामीण जीवनको सर्वांगीण और अधिक समृद्ध बनाना तथा जमीन संबंधी सच्ची नीति क्या हो, अिसका संशोधन करके कमसे कम अेक अहिंसक प्रजातंत्रकी अिकाअी स्थापित करना।

अिस प्रयोगकी शुरुआत अिस सिद्धांतसे होती है कि शोषणकी सबसे बड़ी मार—फिर वह शोषण औद्योगिक पूंजीपतियों द्वारा होता हो या तिजारत द्वारा—अन्तमें जमीनके मजदूरों पर ही पड़ती है। जमीनसे संबंधित लोगोंकी अेक लंबी माला है, जिसके शुरूमें जमींदार, किसान और किरायेसे जमीन जोतनेवाले हैं। शहरोंमें रहनेवाले लोग अिनका शोषण करते हैं और ये फिर अुनसे नीचेके लोग, यानी जमीन पर केवल काम करनेवाले मजदूरोंका शोषण करते हैं। अिस प्रकार शोषणका भी अूपरसे नीचे तक अेक तांता-सा लग जाता है। हमें जो खास संशोधन करना है, वह अिस बातका है कि गांवोंका शोषण कैसे रोका जाय।

कार्यकी योजना

हमारा अिरादा यह है कि हम संतुलित खेती शुरू करें और संतुलित आहार प्राप्त करनेकी दृष्टिसे वहां काम करनेवाले तमाम कार्यकर्ताओंके निर्वाहके लिअे कितने अेकड़ जमीन लगेगी, यह निश्चित करें। साथ ही साथ यह भी सोचा गया है कि खेतीके अिस अुद्योगको करते हुअे कार्यकर्ताओंके कपड़े-लत्ते भी निकल आने चाहियें और अुनके पास कुछ क्रय-शक्ति भी संचित हो जानी चाहिये। अिन बातोंको मद्देनजर रखकर कुछ रचनात्मक कार्यकर्ता कुमारप्पाजीके नेतृत्वमें काम करनेके लिअे अिकट्ठे हुअे हैं। आश्रमका हरअेक सदस्य अपना सारा समय, सारी शक्ति और सारी बुद्धि अिसी कार्यक्रममें लगाये अैसी अपेक्षा है। किसीको भी प्रचलित अर्थमें वेतन या मुआवजा सिक्कोंके रूपमें नहीं दिया जायेगा। हमारी प्राथमिक आवश्यकताअें पूरी हो जानेके बाद यदि हमारे पास अतिरिक्त जमीन होगी, तो हम अुसका अुपयोग हमारी दूसरी हमजोली संस्थाओंकी जरूरतका कच्चा माल, जैसे कपास या तिलहन पैदा करनेके लिअे करेंगे और अुन संस्थाओंसे हम अपनी आवश्यकताओंकी अैसी चीजें खरीदेंगे, जो हम स्वयं पैदा नहीं करते।

हमारी जगह

हमारे कामके लिअे जितनी जमीन हमें चाहिये थी, अुतनी अभी तक हमें मिल नहीं सकी है, क्योंकि यह स्कीम पास होते-होते खेतीके कामोंकी शुरुआत हो चुकी थी। फिर भी आश्रमके लिअे हमें कुछ बहुत ही मामूली प्लाट मिल सके। संभव है कि मौका मिलने पर हमें अधिक और अिससे बढ़िया जमीन प्राप्त करनी होगी। कौनसी जमीन लेना, अिसके लिअे मर्यादायें हैं। क्योंकि कुमारप्पाजीका आग्रह है कि स्थानीय किसानोंको न हटाया जाय। वे चाहते हैं कि अैसी जमीनें प्राप्त की जायं, जिनके मालिक अुन्हें खुद न जोतकर किरायेसे अुठा देते हैं। अिसलिअे हमारी जरूरतकी पूरी जमीन प्राप्त करने तक संभव है काफी समय लग जायगा। मगनवाड़ीमें खेतीका काम जिनके जिम्मे था, वे ही श्री स० ज० पन्नासे यहांका खेती-काम सम्हाल रहे हैं। फिलहाल अिमारतें बनानेके लिअे १६ अेकड़ जमीन हमें मिल सकी है। अुसमें हमने ज्वार, कपास, धान, टमाटर और अन्य सागसब्जी आदि फसलें बोयी हैं।

आश्रमका कुंआ

सबसे प्रथम हमने यहां अेक कुंआ खोदना शुरू किया और अुसे खोदते हुअे जो पानी अुलीचकर बाहर फेंकना पड़ता था, अुसका अुपयोग हमने सागसब्जी बोनेमें कर लिया। जमीनके अंदर पानी कहां लगेगा, यह बता सकनेवाला अेक अनुभवी जानकार हमने पकड़ा और अुसने बताया कि प्लाटके बीचोंबीच १५ फुट पर बहुत

www.vinoba.in

पानी लगेगा। यह मओ महीनेके मध्यकी बात है, जब कि आसपासके सभी कुंओं सूख चुके थे। हमने अुस जगह खोदना शुरू किया और १२-१३ फुट पर ही बहुत अच्छा पानी निकल आया। हमने १० फुट गहरा और खोदा और सद्भाग्यसे वहां अैसा अच्छा और अधिक पानी लगा है कि गांवके कुछ लोग तो यहींसे पीनेका पानी ले जाते हैं। कुंअेकी खुदाओी हो चुकी है, पर अभी तक बांधा नहीं जा सका।

४ जुलाओको अिस कुंअेका मुहूर्त किया गया, ताकि अुसका पानी बाकायदा अिस्तेमाल किया जा सके। अिसका समय सवेरे १० बजे रखा गया था, ताकि अिसमें आसपासके पांच-छह गांवके लोग शामिल हो सकें। कुमारप्पाजी, जो कुछ समय पहले ही वर्धासे आ पहुंचे थे, जो ग्रामीण समयसे पहिले वहां आ गये थे अुनसे बातें कर रहे थे। अुनमें से अेकने कुमारप्पाजीके कार्यकर्ताओंके अस्थाओी रूपसे रहनेके लिअे अेक टीनकी झोपड़ी बना देनेकी तैयारी दिखाओी। फिलहाल आश्रमके लोग सेलडोह गांवमें ही अलग-अलग मकानोंके बरामदोंमें अपना निर्वाह कर रहे हैं। कुमारप्पाजी खुद हरिजन बस्तीके पासकी ही गोंडवाड़ीमें जानबा नामके अेक गोंड काश्तकारके मकानमें रहते हैं।

रा० रा०

रेलगाड़ीमें व्यापार

अुत्तर प्रदेश, जि० बदायूं, से अेक भाओी सही लिखते हैं कि:

"आजकल रेलके डिब्बोंमें जहां जािअये वहां आपको सफरमें कुछ न कुछ खानेका सामान अथवा अन्य वस्तुयें बेचनेवाले लोग मिलेंगे। अिनके पास ९९ प्रतिशत चीजें अिनके कहनेके विपरीत होती हैं। अिसके अतिरिक्त ये चीजें स्वास्थ्यके लिअे हानिकर भी होती हैं, क्योंकि अिनको बेचने व बनानेवालोंको दृष्टि अुनकी पवित्रता तथा स्वास्थ्यकर होने पर कम, लेकिन सस्ती और दिखावटी होने पर अधिक होती है। जबानके जायकेके कारण लोग अिन्हें खरीदते व खाते हैं और अिस प्रकार अिस पेशको प्रोत्साहन मिलता है। खानेकी वस्तुओंके बारेमें राज्यका कर्तव्य है कि वह बिना जांच की हुओी कोओी भी वस्तु अिस प्रकार रेलमें न बिकने दे।

"खानेकी चीजोंके अतिरिक्त बहुतसी औषधियां भी बेची जाती हैं। अुनमें और भी अधिक सतर्कता रखी जाना आवश्यक है।

"अिन सबके अतिरिक्त गाड़ियोंमें अब दूसरा सामान बेचनेवाले लोग भी बहुत रहते हैं। अिनके बेचनेका ढंग अलग-अलग और कुछ अैसा होता है कि जिससे ग्राहक फंस जावे। रेलमें वस्तुयें नीलाम की जाती हैं और अिस प्रकार लोग बिना जरूरत भी अुन्हें खरीद लेते हैं। जो सामान अिस तरह बेचा जाता है, वह सब दिखावटी और अधिकतर बेकार होता है, जैसे बाल काटनेकी मशीन, कैंचियां आदि। नीलाम समाप्त होने पर ये लोग तुरन्त वहांसे चले जाते हैं, ताकि जब लेनेवाला सामान देखे तो अुनसे अुसके बेकार होनेकी शिकायत न कर सके। यह अेक प्रकारकी खुलेआम ठगाओी है।"

गुजरातीमें अेक कहावत है कि जहां लोभी लोग होते हैं, वहां पर धोखेबाज लोग भी होते ही हैं। अिससे लोगोंको खुद अपने लोभको संभालना चाहिये। सरकारी रेलवेवालोंको चाहिये कि यदि अिस तरह रेलगाड़ीमें चीजें बेचना गैरकानूनी हो, तो अुसे बंद करानेकी चेष्टा करें। खानेकी चीजोंकी बात कठिन है। अिसके लिअे स्वादेन्द्रिय पर काबू होना चाहिये। स्वच्छता और आरोग्यका खयाल भी सुधरना चाहिये। लोगोंको नुकसान पहुंचानेवाला व्यापार न करना चाहिये, अैसी समझकी अपेक्षा हमारे व्यापारियोंसे रखना तो सतयुग सरीखी हवाओी बात लगती है।

अहमदाबाद, १७-८-'५१ मगनभाओी देसाओी

श्री मथुरादासभाओीकी अन्तिम अिच्छा

[श्री मथुरादास त्रिकमजीके देहान्त पर लिखते हुअे ता० २१-७-'५१ के 'हरिजन' में यह अुल्लेख किया गया था कि वे अपना शरीर डॉक्टरी विद्याके शोध-कार्यके लिअे वसीयत कर गये हैं। डॉ० जीवराज महेताने दिवंगत परके अपने अेक लेखमें अुनकी अिस अिच्छाका जिक्र अिस तरह किया है:]

अुनकी आखिरी बीमारी अितनी कठिन थी कि सामान्य आदमी अुसमें दो-तीन सालसे ज्यादा नहीं टिकता। लेकिन अुनकी अदम्य अिच्छाशक्ति, संयम और बीमारीके ज्ञानने अुनकी मदद की और बड़ी हद तक वे अुसका नियंत्रण कर सके। डॉक्टरी विज्ञानके प्रति अुन्होंने अपना ऋण पहिचाना और स्वास्थ्यकी रक्षा और अुद्धारकी अिस विद्याका, मृत्युके बाद अुसे अपने शरीरका दान देकर, अनुपम ढंगसे आदर करनेका निश्चय किया। जब अुन्होंने महसूस किया कि बीमारी पर अुनका काबू नहीं रह गया है, और अुनकी तबीयत दिन-ब-दिन खराब हो रही है, तो १७ जून, १९५१ को अुन्होंने मुझे और डॉ० गिल्डरको अेक चिट्ठी लिखी। हम अुस चिट्ठीको जनताके लाभार्थ प्रकाशित करते हैं। अुस चिट्ठीमें वे लिखते हैं: "बापूके जरिये हम लोग अेक-दूसरेके सम्पर्कमें आये। यह सम्पर्क बढ़ा और अुसने जीवन-व्यापी मित्रताका रूप ले लिया। मेरी अनेक बीमारियोंमें मुझे आपकी सेवा और यत्न मिलता रहा है, जो खुद मेरे लिअे 'टानिक' जैसा सिद्ध हुआ है।" अिसी चिट्ठीमें वे आगे लिखते हैं: "डॉक्टरी विज्ञान और डॉक्टरी मित्रोंने मेरे लिअे बहुत कुछ किया है। अिसलिअे मेरी अुत्कट अिच्छा है कि मृत्युके बाद मेरे शरीरका अुपयोग चीरफाड़के लिअे किया जाय, फेफड़ोंकी और हृदयकी जांच की जाय, और यदि संभव हो तो अुन्हें, खासकर जी० अेस० मेडिकल कॉलेज और के० अी० अेम० हास्पिटलमें, अध्ययन और प्रदर्शनके लिअे रखा जाय। मुझे आशा है कि मेरी अिस अंतिम अिच्छा पर अमल करनेमें आपको कोओी हिचकिचाहट नहीं होगी।" श्री मथुरादासभाओीको यह लगता था कि डॉक्टरी विज्ञानमें हुओी प्रगतिके कारण ही अुनका जीवन अितना टिक सका, अिसलिअे बदलेमें अुन्हें अिस विज्ञान और मानवताकी यथाशक्ति सेवा करनी चाहिये। अिसीलिअे मथुरादासभाओीने स्वेच्छासे अपना मृतदेह अुसकी परीक्षाके लिअे दिया। अुनकी अिस अिच्छाके अनुसार के० अी० अेम० हास्पिटल तथा सेठ जी० अेस० मेडिकल कालेजके 'डीन' डॉ० धायगुडे और अुनके सहकारियोंने यह परीक्षा की और अिस बातकी अमूल्य जानकारी दी कि श्री मथुरादासभाओी दस वर्षके लम्बे समय तक अपने रोगसे किस तरह सफलतापूर्वक लड़ते रहे। श्री मथुरादासभाओीका यह निर्णय अुनकी दृढ़ आत्मश्रद्धाका निर्देशक है, जो कि अुनके सार्वजनिक जीवनकी खास विशेषता थी।

अिस प्रशंसनीय आत्मबलिदानको सफल बनानेमें श्री मथुरादासभाओीके परिवारके सदस्योंने जिस तत्परता और खुशीके साथ अुनकी अिस अन्तिम अिच्छा पर अमल करनेमें अपनी सहमति दी, अुसके लिअे मैं और डॉ० गिल्डर वैद्यक समाजकी ओरसे अुनका हार्दिक आभार मानते हैं। श्री मथुरादासभाओीने अपने शरीरका जैसा अुपयोग होने दिया, शरीरकी वैसी परीक्षा और अभ्यासके कारण ही विदेशोंमें डॉक्टरी विज्ञानकी अितनी प्रगति हुओी है। हम लोग आशा करते हैं कि श्री मथुरादासभाओी और अुनके परिवारके लोगोंके अिस सेवाकार्यकी भावनाको दूसरे लोग भी समझेंगे। त्यागकी यह भावना ही राष्ट्रमें प्रगतिकी भावना जाग्रत करती है और अुसका गौरव बढ़ाती है। श्री मथुरादासभाओीने डॉक्टरी विज्ञान और मानवताके हितार्थ अेक श्रेष्ठ अुदाहरण हमारे सामने रखा है। आशा है कि हम अुसका सच्चा अनुसरण करेंगे।

(अंग्रेजीसे) जीवराज महेता

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२५ अगस्त १९५१

गांधीजी और गोवध

पत्रोंमें प्रकाशित रिपोर्टके अनुसार कांग्रेसके बंगलोर अधिवेशनमें (१४ जुलाअी, '५१) श्री जवाहरलाल नेहरूने कहा कि:

"गोवधके बारेमें काफी कहा गया है, और अिस प्रसंगमें गांधीजीका नाम भी लिया गया है। लेकिन गांधीजी कानूनके द्वारा गोवध बंद करनेके खिलाफ थे।"

गांधीजीके नामका अुपयोग अपने-अपने हेतुकी सफलताके लिअे आजकल हर कोअी करता है। अैसे अवसर हो सकते हैं, जब कि अुनका नाम लेना स्वाभाविक और अुचित हो। लेकिन यह आदत तब सदोष हो जाती है, जब अुनका नाम गलत ढंगसे लिया जाता है। और यहां अिस अुदाहरणमें मुझे खेद है कि दूसरे पक्षके द्वारा अुनके नामकी दुहाअी देनेकी बनिस्बत श्री जवाहरलाल नेहरूका प्रतिवाद ज्यादा गलत है।

मैंने यह ढूंढ़नेकी कोशिश की कि गांधीजीने कानूनके द्वारा गोवध-बंदी पर क्या कहा है। ७ जुलाअी, १९२७के 'यंग अिन्डिया' में 'मैसूरमें गोरक्षा' लेखमें अुन्होंने अिस सवालकी स्पष्ट चर्चा की है। मैसूरकी बहुतेरी गोरक्षा-समितियोंका खयाल था कि गांधीजी किसी भी परिस्थितिमें गोवध पर कानूनी रोकके बिलकुल खिलाफ हैं", और अुन्होंने गांधीजीको विरोधका चिट्ठियां भेजी थीं। मैसूर राज्यने अेक मैसूर गोरक्षा-समिति नियुक्त की थी। अिस समितिकी प्रश्नावलीके जवाबमें गांधीजीने जो पत्र लिख भेजा था, अुसके कुछ प्रकाशित अंशोंसे ही यह गलतफहमी पैदा हुअी थी। अिसलिअे गांधीजीने अपनी स्थिति साफ करनेके लिअे अपना पूरा पत्र प्रकाशित कर दिया। गांधीजीका यह लेख अिसलिअे भी महत्त्वपूर्ण है कि आर्थिक दृष्टिसे गोवध असंभव हो जाय, अिस हेतुसे अुसमें कअी रचनात्मक सुझाव भी दिये गये हैं। अच्छा हो अगर संसदमें पेश गो-संवर्धन बिलके रचयिता अिस लेखको ध्यानपूर्वक पढ़ जायं। पाठकोंकी सुविधाके लिअे अुसे अिसी अंकमें अन्यत्र दिया जा रहा है।

गोवध पर गांधीजीका अभिप्राय बतानेवाले दूसरे भी कुछ अुद्धरण यहां दिये जा रहे हैं:

"अिसलिअे गो-रक्षाके पीछे जो दर्शन है, वह मेरे मतानुसार अत्यंत अुच्च कोटिका है। जहां तक जीवनके अधिकारका सवाल है, वह प्राणि-जगतको अेकदम मनुष्यकी बराबरी पर ला बिठाता है। लेकिन जो लोग गो-रक्षामें विश्वास नहीं करते, अुन्हें गोवध करनेसे बलात् रोकना हिन्दूधर्मका अंग नहीं है।" ('यंग अिन्डिया', ११-११-'२६; 'हिन्दूधर्म' पृ० ३०४)

"गोरक्षाको मैं हिन्दू धर्मका प्रधान अंग मानता हूं। प्रधान अिसलिअे कि अुच्च वर्गों और आम जनता दोनोंके लिअे यह बराबर है। फिर भी अिस बारेमें हम जो अकेले मुसलमानों पर ही रोष करते हैं, यह बात किसी भी तरह मेरी समझमें नहीं आती। अंग्रेजोंके लिअे रोज कितनी ही गायें कटती है। परन्तु अिस बारेमें हम कभी जबान तक भी शायद ही हिलाते होंगे। बस, जब कोअी मुसलमान गायकी हत्या करता है, तब हम क्रोधके मारे लाल-पीले हो जाते हैं। गायके नामसे जितने भी झगड़े हुअे हैं, अुनमें से अेक-अेकमें निरा पागलपन भरा शक्तिका क्षय हुआ है। अिससे अेक भी गाय नहीं बची। अुलटे, मुसलमान ज्यादा जिद्दी बने हैं और अिस कारणसे ज्यादा गायें कटने लगी हैं। . . . मुसलमानोंके हाथसे होनेवाले गोवधको हिन्दू न भी रोक सकें, तो अिसमें अुनके मत्थे पाप नहीं चढ़ता। लेकिन जब वे गायको बचानेकी खातिर मुसलमानोंके साथ झगड़ा करने लगते हैं, तब जरूर भारी पाप करते हैं।" ('गोसेवा')

"मैं जानता हूं कि गायके प्रश्न पर हिन्दुओंकी भावनाकी रक्षा क्या करनेसे होगी। अुसके लिअे मुसलमानोंको स्वेच्छासे खानेके लिअे या बलिदानके लिअे गोवध बिलकुल बंद करना होगा। कोअी आततायी शस्त्र-बलसे गायका वध न होने दे, तो अिस गोरक्षासे हिन्दू धर्मको संतोष होनेवाला नहीं है।" ('यंग अिन्डिया' १-१-२९; 'हिन्दूधर्म', पृ० ३०६-७)

'मैसूरमें गोरक्षा' नामक लेख और अुपरोक्त अुद्धरणोंसे यह समझमें आ जायगा कि गांधीजी "प्रजाके किसी भी हिस्से द्वारा धार्मिक समझे जानेवाले कामके लिअे हो रहे गोवधको देशकी प्रजाके समझदार बहुमतकी स्वीकृति प्राप्त किये बिना" रोकनेके खिलाफ थे। आजकी मांग गोवध पर पूरी रोक लगानेकी है। ब्रिटिश शासन-कालमें भी लोगोंमें अिस बातकी हार्दिक चाह थी। लेकिन देश पराधीन था, अिसलिअे लोगोंमें यह मांग पेश करनेके लिअे आवश्यक साहस नहीं था। और सारी दुर्बल जातियोंकी तरह गोवधके खिलाफ अपनी भावना जाहिर करनेके लिअे हिन्दू अपने देशभाअी मुसलमानों पर ही सारा गुस्सा निकालते थे। गांधीजी तो सत्याग्रही थे, अिसलिअे वे विरोधके अिस कायर और दुर्बल प्रदर्शनसे सहमत नहीं हो सकते थे। अिसमें मुझे कोअी सन्देह नहीं है कि वे गोवध बिलकुल बन्द हो जानेके पक्षमें थे; लेकिन अगर मुसलमानोंकी ओरसे यह कहा जाता कि मुस्लिम धर्म-विधिके अनुसार कुछ अवसरों पर गौका बलिदान देना अुनका फर्ज है, तो वे हिन्दू राज्यमें भी अुन्हें यह अधिकार देनेके लिअे राजी हो जाते। अुनके यह कहनेकी तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि चूंकि कत्ल की हुअी गायका मांस और चमड़ा स्वाभाविक मृत्युसे मरी हुअी गायकी अपेक्षा ज्यादा अच्छा होता है, अिसलिअे वे गोवध-बन्दीका कानून नहीं बनायेंगे।

मैं समझता हूं कि यह अब आम तौर पर मान लिया गया है कि गायका बलिदान अिस्लाममें कोअी धार्मिक फर्ज नहीं है। मुसलमान सिर्फ अितना ही कहते हैं कि हिन्दू धर्ममें जिस तरह अुसे मना किया गया है, अुस तरह अिस्लाममें अुसका निषेध नहीं है। और मेरा विश्वास है कि बहुतसे मुसलमान त्यौहारों पर गो-वधकी प्रथा स्वेच्छासे छोड़ते जा रहे हैं। अिसलिअे अिस विषयका रूप अब बिलकुल बदल गया है। अिस कारणसे अब गांधीजीका नाम अिस आन्दोलनके पक्षमें या विपक्षमें लेना गलत है; न लिया ही जाना चाहिये। हां, हम अुनके मतोंका हवाला अवश्य दे सकते हैं; और किसी बड़े नेता, दार्शनिक या किसी विषयके निष्णातके मतको जितना आदर हम देते हैं, अुतना अुन्हें भी अवश्य दिया जाना चाहिये। लेकिन अिस समय अिस बातकी बहुत जरूरत है कि सारे सार्वजनिक सवालों पर हम अपनी बुद्धि और भावनाके अनुसार निर्णय करना सीखें और अगर जरूरत हो, तो साहसके साथ गांधीजीसे भी मतभेद जाहिर करें। अपने विरोधीका मुंह बन्द करनेके लिअे गांधीजीके कथनका सही या गलत हवाला देनेकी बनिस्बत अैसा करना गांधीतत्त्वके अधिक अनुकूल होगा।

वर्धा, ३१-७-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

मैसूरमें गोरक्षा

मैसूर राज्यने गोरक्षाके सवालकी चर्चा करनेके लिअे अेक कमेटी बनाओी थी। अुसने अपने प्रश्न मेरे पास भी भेजे थे। अुनके अुत्तरमें मैंने जो खत भेजा था, वह प्रकाशित हुआ है। अुसके खिलाफ मैसूरकी गोरक्षा सभाओंकी तरफसे पत्र आये हैं। मेरे पत्रका जिन गोरक्षा सभाओंने अैसा अर्थ किया दीखता है कि कानून बनाकर गावध बन्द करवानेके में बिलकुल विरुद्ध हूं। अुनके पत्रोंसे मुझे आश्चर्य हुआ और मैं सोचने लगा कि कहीं भूलसे या बेपरवाहीसे मैंने अपने पत्रमें यह राय तो नहीं दे दी कि गोवधके विरुद्ध कानून बन ही नहीं सकता? अिसलिअे मैंने गोरक्षा कमेटीको लिखकर अपने असली खतकी नकल मंगवाओी, जो कृपा करके अुसने भेज दी है। चूंकि अिस पत्रमें गोरक्षाके बारेमें मेरा निश्चित मत दिया गया है, अिस खतको गारक्षा कमेटीने कुछ महत्त्व दिया है और गोरक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण सवालके बारेमें मैसूरको प्रजामें कुछ गलतफहमी पैदा हुआ है, अिसलिअे पत्र ज्योंका त्यों नीचे देता हूं:

(यह पत्र पूछे हुअे प्रश्नोंका अुत्तर देनेमें बड़ी देर हो जानेके कारण क्षमाके साथ शुरू होता है। —संपा०)

"मुझे यह पसन्द नहीं कि धार्मिक मामलोंके बीचमें सरकार पड़े। और हिन्दुस्तानमें गायके प्रश्नका सम्बन्ध धर्म और अर्थ दानोंके साथ है। आर्थिक दृष्टिसे ही सोचें, तो मुझे कुछ भी शक नहीं कि हर हिन्दू या मुसलमान राज्यका यह फर्ज है कि वह अपने यहां पशुओंको रक्षा करे। लेकिन आपके सवालोंका मैंने ठीक अर्थ समझा हो, तो अुनका तात्पर्य यह मालूम हाता है कि हिन्दू और मुसलमानोंके बीचमें पड़कर जिस कायका मुसलमान धार्मिक मानते हैं अुसके लिअे होनेवाले गोवध पर कोओ प्रतिबन्ध डालनेका राज्यको अधिकार है या नहीं? हिन्दुस्तान जैसे देशमें, जिसे मैं यहां जनमे हुअे हिन्दुओंका ही नहीं, बल्कि यहां जनमे हुअे मुसलमान, ओसाओी और सभी लोगोंका देश मानता हूं, हिन्दू राज्य भी जिस कामको अुसकी प्रजाका कोओ भी भाग धार्मिक समझता हो, अुसके लिअे होनेवाले गोवधको अुस प्रजाके समझदार लोगोंका बहुमत प्राप्त किये बिना नहीं रोक सकता, बशर्ते कि गोवध खानगी तौर पर और हिन्दुओंको अुकसाने या अुनके दिल दुखानेकी गरजसे न होता हो। यह तो निश्चित है कि अिस तरह होनेवाले गोवधके ज्ञानमात्रसे हिन्दुओंके भावको ठेस पहुंचती है। लेकिन दुर्भाग्यसे हम जानते है कि हिन्दुस्तानमें बहुत बार हिन्दुओंको सताने और जान-बूझकर अुनका दिल दुखानेके लिअे भी गोवध किया जाता है। अैसा गोवध तो हर राज्यको, जिसे अपनी प्रजाके लिअे जरा भी खयाल हो, बन्द करना ही चाहिये।

"लेकिन मेरी रायके माफिक गोरक्षाका प्रश्न बराबर समझ लिया जाय, तो अुसमें धर्मका नाजुक सवाल भी अपने आप हल हो जायगा। गोवध आर्थिक तरीकेसे ही असम्भव होना चाहिये और असम्भव किया जा सकता है, हालांकि दुर्भाग्यसे हिन्दुस्तान ही संसारमें अैसा देश है जहां हिन्दू जिसे पवित्र मानते हैं, अुसी पशुकी हत्या सस्तीसे सस्ती हो चली है। अिस सम्बन्धमें मैं नीचे लिखे अुपाय सुझाता हूं:

१. बाजारमें बिकने आनेवाली तमाम गायें ज्यादासे ज्यादा कीमत देकर राज्य खरीद ले।

२. राज्य अपने सब मुख्य शहरोंमें दुग्धालय खोलकर सस्ता दूध बेचे।

३. राज्य चर्मालय स्थापित करे और वहां अपने तमाम निजी ढोरोंकी हड्डी, चमड़ी वगैराका अुपयोग करे और प्रजाके ढोरोंमें से तमाम मरे हुअे ढोर भी खरीद ले।

४. राज्य नमूनेकी पशुशालायें रखे और पशुओंके नसल-सुधार और अुनके पालनकी कलाका लोगोंको ज्ञान दे।

५. सरकार विशाल गोचर भूमिकी व्यवस्था करे और गोरक्षाका शास्त्र लोगोंको समझानेके लिअे अुत्तमसे अुत्तम विशेषज्ञोंकी सेवा प्राप्त करे।

६. अिसके लिअे अेक खास महकमा कायम करे और अिससे मुनाफा कमानेका बिलकुल विचार न रखते हुअे यही अुद्देश्य रखे कि पशुओंकी अलग-अलग नसलमें और अुनकी रक्षा आदिके हर विषयमें समय-समय पर होनेवाले सुधारका लोग पूरा-पूरा लाभ अुठावें।

"अिस योजनामें यह तो आ ही जाता है कि तमाम बूढ़े, लूले-लंगड़े और रोगी ढोरोंकी रक्षा राज्यको ही करनी चाहिये। बेशक यह बोझा भारी है, लेकिन यह बोझा अैसा है, जिसे हर राज्यको और खासकर हिन्दू राज्यको तो अुठाना ही चाहिये। अिस प्रश्नके अध्ययन परसे मेरा तो यह खयाल है कि शास्त्रीय ढंगसे दुग्धालय और चर्मालय चलाये जायं, तो खाद देनेके सिवाय और तरहसे आर्थिक दृष्टिसे निकम्मे जानवरोंका राज्य निर्वाह कर सकेगा, अितना ही नहीं, बल्कि बाजार भावसे चमड़ा, चमड़ेका सामान, दूध, घी और मक्खन वगैरा और मरे हुअे जानवरोंसे जो कुछ खाद वगैरा निकल सकता है वह भी बेच लेगा। शास्त्रीय ज्ञानके अभावसे और झूठी भावनाओंके मारे यह सब चीजें प्रायः बेकार जाती हैं या अुनसे अधिकसे अधिक लाभ नहीं अुठाया जाता। अिस योजनाके बारेमें कुछ हकीकत आप जानना चाहते हों, तो मेहरबानी करके लिखियेगा।"

गोरक्षा सभाओंके सदस्योंके साथ चर्चा करनेके बाद अथवा अुनके पत्रोंको पढ़ जानेके बाद अुपरोक्त पत्रमें जो राय दी गओी है, अुसमें जरा भी परिवर्तन करनेको जरूरत नहीं मालूम होती। पाठकोंने देखा होगा कि मैंने कहीं भी अैसा नहीं कहा कि किसी भी हालतमें गोवधके विरुद्ध कानून नहीं बन सकता। मैंने अितना तो जरूर कहा है कि गोवध चाहनेवाली प्रजाके समझदार वर्गके बड़े भागकी सम्मतिके बिना गोवध बन्द करनेका कानून नहीं बन सकता। अिस कारण मैसूरकी मुसलमान प्रजाका अधिकांश समझदार वर्ग गोवध बन्द करनेके कानूनके खिलाफ न हो, तो मैसूर राज्य अैसा कानून बना सकता है। अितना ही नहीं, अैसा कानून बनाना अुसका फर्ज है। गोरक्षा सभाओंके जो सदस्य मुझसे मिलकर गये, अुन्होंने मुझे विश्वास दिलाया है कि मैसूरमें हिन्दू-मुसलमानोंका सम्बन्ध मीठा है और मुसलमानोंका अधिकतर भाग हिन्दुओंकी तरह चाहता है कि गोवध कानूनसे बन्द कर दिया जाय। अुनसे यह सुनकर भी मैं खुश हुआ कि बहुतसे युरोपियन, खास तौर पर पादरी, अैसे कानूनके पक्षमें हैं। अर्थात् मैसूरमें गोवध बन्द करनेके मामलेमें अगर अूपरकी हकीकत सच्ची हो, तो रास्ता साफ है — राज्य कानून बनाकर गोवध बन्द कर दे।

लेकिन मेरे पत्रमें जो लिखा है और अिस साप्ताहिकमें कओी बार जोर देकर बताया गया है, अुसे जरा अधिक स्पष्ट करनेकी जरूरत है। वह यह कि कानून बनाकर गोवध बन्द करनेसे गोरक्षा नहीं हो जाती। यह तो गोरक्षाके कामका छोटेसे छोटा भाग है। लेकिन मेरे पास जो पत्र आते हैं, और बहुतेरी गोरक्षा सभाओंकी प्रवृत्तियोंको जहां तक मैं जानता हूं, अुनसे मालूम होता है कि वे तो कानूनसे ही सन्तोष मान लेंगे। अिन सब मंडलोंको मैं यह चेतावनी देना चाहता हूं कि कानून पर ही आधार बांधकर न बैठ जायं। क्या कानूनके जालमें फंसे हुअे अिस देशमें अभी और कानूनकी गुंजाअिश है? लोग अैसा मानते दीखते हैं कि किसी भी बुराओीके विरुद्ध कोओी कानून बना कि तुरन्त वह

www.vinoba.in

किसी झंझटके बिना मिट जायगी। अैसी भयंकर धोखाधड़ी और कोओी नहीं हो सकती। किसी दुष्ट बुद्धिवाले अज्ञानी या छोटेसे समाजके खिलाफ कानून बनाया जाता है, तो अुसका असर भी होता है। लेकिन जिस कानूनके विरुद्ध समझदार और संगठित लोकमत हो, या धर्मके बहाने छोटेसे छोटे मंडलका भी विरोध हो, वह कानून सफल नहीं होता।

गोरक्षाके प्रश्नका जैसे-जैसे मैं अधिक अध्ययन करता जाता हूं, वैसे-वैसे मेरा मत दृढ़ होता जाता है कि गांवों और वहांकी जनताको रक्षा तभी हो सकती है, जब कि मेरी अूपर बताओी हुओी दिशामें निरन्तर प्रयत्न किया जाय। अूपर मैंने रचनात्मक कार्यक्रमकी जो रूपरेखा बतायी है, अुसमें सुधार या कमीबेशी करनेकी गुंजाअिश हो सकती है और शायद है। लेकिन अिसमें शंका न होनी चाहिये कि हिन्दुस्तानके पशुओंको नाशसे बचाना हो, तो वह विस्तृत रचनात्मक कार्यक्रमके बिना असम्भव है। और पशुओंकी रक्षा हिन्दुस्तानके अुन करोड़ों भूखों मरते स्त्री-पुरुषोंको रक्षाकी पहली सीढ़ी है, जिनकी दशा भी हमारे जानवरों जैसी हो गओी है।

[नोट: यहां गांधीजी साधारण तौर पर हिन्दू राजाओंके कर्तव्योंका और खास तौर पर सन् १९२७ में गोसेवाके लिअे मैसूर राज्यको अनुकूल परिस्थितियोंका जिक्र करते हैं। —संपा०]

अिस प्रकार राजा और प्रजा पशुपालनमें, दूध पूरा पहुंचानेके सवालमें और मुर्दा जानवरोंका अुपयोग करनेके बारेमें लोक-कल्याणके लिअे सहयोग न करें, तो गोवधके खिलाफ कितने ही कानून बन जाने पर भी हिन्दुस्तानके ढोर कसाओीके हाथों बेमौत मरनेके लिअे ही पैदा होंगे। जब हिन्दुस्तानके पुरुषों और स्त्रियोंको प्रभुके दरबारमें हाजिर होना पड़ेगा, तब सभाओंमें कुदरतके कानूनका अज्ञान माना नहीं जायगा।

बंगलोरकी गोरक्षा सभासे यह जानकर मुझे आघात पहुंचा है कि बंगलोर और मैसूरके सरकारी बगीचेके जानवरोंको अिस शहरके कसाओीखानेमें से लाकर गोमांस खिलाया जाता है; गोमांस दूसरे किसी भी मांससे सस्ता है। और आदि कर्नाटक लोग, जो हिन्दू होनेका दावा करते हैं और अपनेको हिन्दू मनाते आये हैं और रामायण महाभारतका दूसरे किसी भी हिन्दू जितना ही अध्ययन करते हैं, गोमांस खाते हैं। अगर यह सब बात सच्ची हो, तो अिस हालतके लिअे साफ तौर पर वे हिन्दू जिम्मेदार हैं, जो अुनसे ज्यादा अच्छी दशा भोगते हैं। अगर आदि कर्नाटक लोग गायमाताकी पवित्रताका आदर न करते हों, तो अुसका कारण अुनका अज्ञान है। मगर जिन हिन्दुओंने अपने भाअियोंको हिन्दुत्वका मूल तत्व — गोरक्षा — समझानेका प्रथम कर्तव्य भी पालन नहीं किया, अुन हिन्दुओंके लिअे मैं क्या कहूं?

१७-७-'२७ **मोहनदास करमचंद गांधी**

('गोसेवा'से)

गोसेवा

गांधीजी

कीमत १–८–० डाकखर्च ०–४–०

भारतमें गाय

(दो भाग)

लेखक: **सतीशचन्द्रदास गुप्ता**

कीमत १३–०–० डाकखर्च १–१०–०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–९

शिवरामपल्लीमें विनोबा

१०

(८) ता० ११-४-'५१ की शामको हैदराबाद रियासतके कार्यकर्ताओंके साथ:

बचपनमें मैंने बहुत-कुछ घरमें ही पढ़ा। स्कूलमें बहुत कम पढ़ा। पर जितने दिन पढ़ा, गहरा चिन्तन किया और जब चिंतन समाधानकारक मालूम हुआ, स्कूल छोड़ा। फिर तो घर भी छोड़ा। लेकिन भूगोलका अभ्यास कभी नहीं किया, क्योंकि परीक्षाओंमें अुसके बिना भी पास हो सकते थे। केवल अितिहासमें अच्छे नंबर पाना काफी था। लेकिन मैं मानता हूं कि भूगोल बहुत ही दिलचस्प विषय है। आगे कुछ दिनोंके बाद मैं बापूके पास चला गया। फिर कुछ दिन घूमता रहा। अेक साल अर्थ-शास्त्रका अभ्यास किया। प्रयोगके तौर पर केवल दो आनेमें भोजन करता रहा। अेक साल भूगोलका अभ्यास किया। अुस वक्त हैदराबादका विशेष अभ्यास करनेका मौका मिला। तभीसे मेरे दिलमें अेक खटका-सा रहा कि मराठोंने भूल की और निजामको कायम रखा। मुझे अितिहास तो पहलेसे ही मालूम था — प्राचीन कालसे आज तकका, छोटेसे छोटे स्थानका। अिसलिअे जब दो बरस पहले मैं औरंगाबाद गया, तब पैठण, दौलताबाद, वेरूल और अजंता तो गया ही, परंतु असओी भी देख आया। जैसे प्लासीके कारण अंग्रेजोंका बंगालमें प्रवेश हुआ, वैसे असओीके कारण अुनका हिन्दुस्तान भरमें प्रवेश हुआ। अंग्रेजोंके मुकाबलेमें वहां सिंधिया लड़ते थे। वे हार गये। यह सब अिसलिअे कहा कि मैंने अितिहासका अध्ययन किया, तबसे ही मेरे मनमें यह खयाल था कि यह अुपेक्षित भूमि है और यहां घूमनेका संकल्प बीज-रूपमें तभीसे था। अब वह पूरा हुआ। वैसे सर्वोदय-सम्मेलनके लिअे जाना अगर तय होता, तो फिर वह आगरा, मथुरा या जहां भी होता, मैं जाता और पैदल ही जाता। लेकिन पहले मेरा विचार संमेलनके लिअे जानेका ही नहीं था। अब, जब कि यहां आ ही गया हूं और ३५० मील चल चुका हूं, तो वापसीमें भी पैदल ही जानेका विचार है। और जाते समय नलगुंडा, वारंगल होते हुअे जानेका तय किया है।

भारतकी समस्याओंका नमूना यहां है

आप यहां तीन भाषावाले लोग रहते हैं। भाषावार प्रान्त-रचनाका सवाल जब आयेगा, तब आप जैसा चाहें कीजियेगा; अुसमें हम कुछ नहीं कहेंगे। लेकिन तब तक अेक बात आप लोग कर सकते हैं, और अुसका बड़ा असर होगा। अुसका अिशारा अुस दिन हैदराबादके व्याख्यानमें मैंने किया है। हिन्दुस्तान भरमें जो समस्यायें हैं, वे सब यहां मौजूद हैं। अुनके हल करनेमें हिन्दुस्तानकी समस्याओंका हल हो जाता है। अुसके लिअे हो सके तो अेक भाषा करनेकी कोशिश करना, हो सके तो लिपि भी अेक करना। अुर्दूका प्रचार यहां पहलेसे है। अुर्दूके कारण यहांकी हिंदी अच्छी मुहावरेदार हो सकती है। अगर यह साबित हो जाय कि हैदराबादमें हम सब प्रेमसे रह सकते हैं, तो जाहिर है कि हम हिन्दुस्तानकी बहुत भारी सेवा कर सकेंगे। अिसलिअे हमें यह भावना छोड़ देनी चाहिये कि मैं मराठा हूं, मैं तेलंगा हूं या मैं कन्नडिग हूं। हम सब भारती हैं और कुल मिलाकर अेक हैं, और अेक होकर हैदराबादकी प्रेमपूर्वक सेवा करेंगे। अगर आपसे यह बन जाता है, तो आप मुल्ककी बहुत बड़ी खिदमत करते हैं।

तेलंगानाकी गुलामीकी जड़ें सिन्दी-ताड़ीमें हैं

दूसरी बात मुझे सिंदीके बारेमें कहनी है। हिन्दुस्तानकी संस्कृतिमें सिंदी है ही नहीं, अैसा मेरा खयाल था। और यहां जितने सिंदीके वृक्ष और सिंदीका यह व्यसन देखकर मैं अिस

www.vinoba.in

नतीजे पर आया कि अिस सिंदीके कारण ही यह मुल्क अब तक अितनी गुलामीमें रहा। अफीमके कारण चीनकी जो हालत हुअी, वही अिस सिंदीके कारण तेलंगानाकी हुअी है। यहां आम लोगोंमें जो जड़ता नजर आती है, अुसका संबंध भी सिंदीके साथ ही है। अिस व्यसनसे लोगोंको छुड़ाना केवल सरकारी कानूनका काम नहीं। यह तो सुधारका काम है और धार्मिक सुधारका काम है। लोगोंका स्वभाव ही बदल देनेकी बात है। पुरुषार्थकी बात है। यह मेरा अपना विश्लेषण है। अगर आपको जंच जाय, तो आप सबको अिस सुधारकी प्रेरणा होगी। मैंने 'सुधार' यानी रिफॉर्म अिसलिअे कहा कि आजकल 'रिफॉर्म विरुद्ध रिवोल्यूशन' (यानी सुधार विरुद्ध क्रांति) की चर्चा चल रही है। वास्तवमें अिसमें विरोधकी बात नहीं है। यह रिफॉर्म अैसा है, जो रिवोल्यूशनकी तरफ ले जानेवाला है। सरकारी कानूनसे यह नहीं हो सकता। कानूनसे सरकारकी तिजोरीका पैसा घटेगा, पर व्यसन नहीं मिटेगा। अिसलिअे सेवकोंको अिस काममें जुट जाना चाहिये।

सर्वोदय-समाज और धर्मका संबन्ध

प्रश्न: सर्वोदय-समाजसे धर्मका कौनसा हिस्सा ताल्लुक रखता है?

अुत्तर: धर्ममें कअी चीजें होती हैं। अेक अुपासना होती है, जिसमें परमेश्वरके साथ सीधा संबंध होता है। दूसरी चीज है नीतिशास्त्रकी, जिसका संबंध सत्य, अहिंसा, आदिसे रहता है। तीसरे, रीति-रिवाज हैं, जैसे जन्म, मृत्यु आदिसे संबंध रखनेवाली बातें। चौथी चीज है पुराण, कथायें, आदि। अिस तरह धर्मके कअी हिस्से हैं। अुनमें से नीतिका हिस्सा सर्वोदय-समाजसे ताल्लुक रखता है। जो अुपासनाका हिस्सा है, अुसके बारेमें सर्वोदय-समाजको कुछ नहीं कहना है। पुराण तथा रीति-रिवाज आदिका भी सर्वोदयसे कोअी ताल्लुक नहीं है। अिन सबके अलावा सर्वोदयमें अेक और बात है। हर मनुष्यको खाने-पीने, रहने-जीनेका हक है, यह जो बुनियादी बात है, अुसे सब धर्मवाले मानते हैं। परंतु अिस संबंधमें किसीने कोअी खास प्रोग्राम नहीं बताया है। हां, कुछ सूचनायें जरूर दी हैं, मसलन अिस्लामने ब्याज न लेनेकी हिदायत की है। अगर अुसका अमल किया जाय, तो पूंजीवादका खात्मा अपने आप हो जाता है।

नीति-विचार सभी धर्मोंमें समान हैं। लेकिन सर्वोदयमें प्रतिकारको स्थान है। प्रतिकार किसी व्यक्तिका नहीं, कुविचारका। अुसमें कुविचारका प्रतिकार सुविचारसे करनेकी बात है। अिसलिअे सुविचारके विरुद्ध कुविचार खड़ा होता है, तो सुविचार अन्कॉम्प्रमाअिजिंग (ढीला न बननेवाला) होता है। कुविचारके साथ वह हरगिज समझौता नहीं कर सकता। मनुष्य-मनुष्यकी लड़ाअीमें दोनों पक्षोंमें बुराअी-भलाअी होती है। जहां अैसी मिश्र लड़ाअी होती है, वहां वह अन्कॉम्प्रमाअिजिंग नहीं होती। अुसमें समझौतेकी गुंजाअिश रहती है। लेकिन जहां अेक तरफ खालिस धर्म होता है और दूसरी तरफ खालिस पाप होता है, वहां समझौता नहीं हो सकता। अिसलिअे सत्य और असत्यमें, अच्छाअी और बुराअीमें कोअी समझौता नहीं हो सकता।

११

(९) ता० १२-४-'५१ को सवेरे ९ बजे व्यापारियोंके साथ:

"दुनिया सचाअी पर ही टिकी हुअी है। पचास फी सदीसे ज्यादा सत्य दुनियामें है, अिसीलिअे वह कायम है। जिस दिन सत्य कम हो जायेगा और असत्य पचास फी सदीसे ज्यादा हो जायगा, अुस दिन प्रलय हो जायगा।"

www.vinoba.in

हैदराबादके व्यापारियोंके साथ बातचीत करते हुअे विनोबाने अुपरोक्त शब्द कहे। संमेलनके पंडालमें ही व्यापारी लोग विनोबासे मिले। श्री टोकरसीभाअीने अुपस्थित मित्रोंका परिचय कराया तथा वर्तमान व्यापारी परिस्थितिसे विनोबाको परिचित किया।

अपने प्रास्ताविक भाषणमें विनोबाने कहा:

"मेरा अपना खयाल तो यह है कि अिन्सान अधिक तादादमें दुराचारी नहीं हो सकते; बल्कि परमेश्वरकी नीतिके अनुसार तो अधिकतर लोग सदाचारी ही रहते हैं। व्यापारियोंका नाम दुनियामें आजकल कुछ बदनाम-सा हो गया है। अुनकी प्रतिष्ठा कुछ कम हो गअी है। लेकिन लोगोंका चारित्र्य गिर गया है, अैसा मैं नहीं मानता। हां, हवा कुछ बिगड़ जरूर गअी है, जिसका यह सब परिणाम है। कुछ लोग, जो हवासे अूपर रहते हैं, सज्जनताका धर्म नहीं छोड़ते। अुन्हें हम कानूनसे अूपर कहते हैं। कुछ लोग कानूनसे परे होते हैं। जो कानूनको मानते ही नहीं, वे दुर्जन होते हैं। अिन दोनोंको छोड़कर बाकी लोग अकसर प्रवाहके साथ रहते हैं। प्रवाह अच्छा तो वे अच्छे; प्रवाह बुरा तो वे भी बुरे। अर्थात् आम जनताको अच्छा रखनेके लिअे हवा अच्छी रहनी चाहिये। हिन्दुस्तानमें आज अेक अैसी हवा चल रही है, जिसके प्रवाहमें किसान, सरकार, व्यापारी, गुमाश्ते, सभी आ गये हैं। अकसर यही होता है कि अच्छी हवामें सब अच्छे रहते हैं, परंतु कॉलरा या प्लेगकी हवाका असर तो सब पर होता है।

"आज हमारी सरकार और हममें, दोनोंमें सहयोग नहीं है। सरकारको अनुभव नहीं, अनुभवसे मिलनेवाला ज्ञान नहीं। अधिकारियोंका रवैया वही पुराना है। सरकार नयी है। वे पुराने ही हैं। अब सुस्त बन गये हैं। व्यापारी लोग विदेशियोंसे टक्कर लेनेके बजाय देहातियोंके धंधोंको लूटते हैं। किसीके यहां कपड़ेकी मिल है, किसीके यहां तेलकी, तो किसीके यहां शक्करकी। यानी अिस तरह व्यापारी लोग देहातोंके अुद्योगोंको छीनते हैं। अिनका सारा पराक्रम, सारी अकल अपने गरीब देहाती भाअियोंके धंधोंको लूटनेमें खर्च हो रही है। विदेशियोंके सामने अुनकी ताकत चलती नहीं। वे दावा करते हैं कि लोगोंको शक्कर चाहिये, अिसलिअे हम शक्करका कारखाना चलाते हैं। परंतु जहां शक्करका कारखाना चलाते हैं, वहां गुड़का ग्रामोद्योग नष्ट होता है। घी मिलता नहीं, अिसलिअे वनस्पतिके कारखाने जारी रखनेकी बात करते हैं। दलील करते हैं कि तेलसे थोड़ा महंगा भले ही हो, लेकिन घीका काम देता है। लेकिन अिस तरह वे गोपालन और खेती दोनोंको नुकसान पहुंचाते हैं। कपड़ेके बारेमें भी अैसी ही बातें करते हैं। आटेके लिअे कहते हैं, हमने स्त्रियोंको कठोर परिश्रमसे, चक्कीकी गुलामीसे मुक्त किया है। स्त्रियों पर पहिले ही बहुत बोझ है, और कितना बोझ डालें? स्त्रियोंको चक्कीसे मुक्त करना और आटेकी मिलको चलाना वे पत्नीसेवा और नारीसेवा समझते हैं। अैसे-अैसे धंधे निकाले हैं कि गरीबोंके हाथके धंधे नष्ट हो चुके हैं। व्यापारियोंको अिस पर सोचना चाहिये।

"मनुष्य बिना खाये तो नहीं रहता। बिना खाये बहुत कम लोग मरते हैं। बोझ तो अिसलिअे पड़ता है कि बिना काम किये खाते हैं। अगर गांवोंके अुद्योग शहरोंमें ही रहें, तो ये चरखे-करघे सब देहातोंसे अुठकर शहरोंमें आ जायंगे। देहातके लोगोंके पोषणका आधार शहरों पर रहेगा। वे लोग बिगड़ जायं और हिंसा करने लगें, तो क्या होगा? कह नहीं सकते। मैंने अपनी यात्रामें कहा है, और यहां फिर दोहराना आवश्यक समझता हूं कि शहरों पर विदेशी व्यापारियोंका आक्रमण तो चल ही रहा है, अिधरसे देहातियोंका आक्रमण शुरू होगा। दोनोंके बीच व्यापारी और

शहरवाले पिस जायंगे। अिसलिअे व्यापारियोंको चाहिये कि अब वे नया साहस प्रगट करें, नये ढंगसे अुद्योगोंका आयोजन करें।

"व्यापारियोंका खयाल यह हो गया है कि अुनका काम तो सिर्फ यहांसे चीजें बाहर भिजवाना और बाहरसे यहां मंगवाना ही है। जब अुनसे हम अुत्पादनकी बातें करते हैं, तो वे कहते हैं — देखिये, हम शक्कर पैदा कर रहे हैं। गोसेवा व्यापारियोंका धर्म है। लेकिन अैसे कामको, जो मुख्य रूपसे अुनका है, वे नहीं करते। वैश्य-कर्म अुन्होंने छोड़ दिया है, अिसलिअे आज व्यापारियोंकी कीमत भी गिर गअी है। सिपाहीकी अिज्जत क्यों होती है? क्योंकि वह मौके पर जान देता है। लेकिन हमारे व्यापारी देशके संकटके समय देशका साथ देनेके बजाय अपने स्वार्थकी ओर अधिक ध्यान देते हैं। यहूदी लोग व्यापारमें बुद्धिमान समझे जाते हैं, पर अुनके देशमें अुनका अनादर क्यों हुआ? क्योंकि पूंजी और धन अिकट्ठा करनेमें ही अुन्होंने अपनी बुद्धि-शक्ति लगायी। अुनके पास अैसी कोअी चीज नहीं, जिसके लिअे वे त्याग कर सकें, जान दे सकें। वे गिर गये। मुसलमानोंके पास अैसी चीज थी, परंतु हिन्दुस्तानके मुसलमानोंके जीवनमें वह प्रगट नहीं हो सकी। तो अिस समय व्यापारियोंको अपना धर्म पहिचानकर देशमें अच्छा वातावरण, अच्छी हवा पैदा करनेमें अपनी पूरी ताकत लगा देनी चाहिये। स्वार्थ भावना छोड़कर देशकी अुन्नतिकी दृष्टिसे व्यापारका संघटन करना चाहिये।

"अेक जमाना था, जब लोग गांधीजीका नाम लेकर जेलमें जाते थे। आज गांधीजीके नामसे बीड़ियां भी बिकती हैं। कच्चे मालसे पक्का माल बनानेका यह अर्थ नहीं कि पापको पुण्यका जामा पहिनानेका प्रयत्न किया जाय। गांधीजी भी व्यापारी थे। अुन्होंने खादीके अुद्योगकी पुनःस्थापना की। जमनालालजी व्यापारी थे। अुन्होंने खादीका अुद्योग बढ़ाया और गोसेवा करते-करते अपना देह छोड़ा। अुन्होंने अपने जीवनसे दिखा दिया कि व्यापार भी असत्यके बिना चल सकता है। पर हमारे व्यापारी समझते हैं कि व्यापार असत्यके बिना हो ही नहीं सकता। वे जानते हैं कि असत्यकी भी अेक मर्यादा होती है, जिसके बाहर वह काम नहीं कर सकता। परंतु आटेमें नमकके बराबर ही क्यों न हो, वे व्यापारमें असत्य आवश्यक समझते हैं। दान-धर्म करते वक्त वे अुदारता भी दिखाते हैं, पर समझते हैं कि दान-धर्मकी बात अलग है, व्यापारकी बात अलग है।

"गांधीजीने कंट्रोल अुठा दिये। लेकिन व्यापारियोंने साथ नहीं दिया। फिर गांधीजीकी मृत्यु हुअी। व्यापारियोंके दिल पर भी अिसका कुछ असर हुआ होगा। परंतु कालप्रवाहमें वे फिर गांधीजीको भूल गये। देशके अितिहासमें अैसे कअी मौके आये, जब व्यापारियोंने देशका साथ देनेके बजाय निजी स्वार्थ ही देखा। स्वदेशी आंदोलनसे व्यापारियोंको कितना लाभ पहुंचा। परंतु हर मौके पर अुन्होंने देशके साथ धोखा ही किया। अपना फायदा देखा, देशका खयाल नहीं किया। आज व्यापारियोंकी सारी बुद्धि-शक्ति सरकारके कानूनोंमें लूप होल (छटक दरवाजा) ढूंढनेमें लग रही है। सरकार और व्यापारी अिन दोनोंमें मानो परस्पर अकलकी लड़ाअी ही हो रही है। मालिककी अकल और मजदूरकी अकल, दोनोंका संकलन होनेके बजाय व्यकलन हो रहा है। अिसलिअे देशके पल्लेमें अकल पूरी नहीं पड़ती। अेककी दस सेर और दूसरेकी आठ सेर अकल हो, तो देशको अठारह सेरके बजाय दो सेर ही मिल रही है। यह सारी परिस्थिति दुःखदायी है। व्यापारी अगर धर्म और नीति पर कायम रहें, तो वर्ण-व्यवस्था जरूर टिक सकेगी। आशा है आप लोग अिन सब बातों पर गंभीरतासे विचार करेंगे।"

विनोबाके अिस प्रास्ताविक भाषणके बाद कुछ प्रश्नोत्तर भी हुअे। अेक भाअीने पूछा कि सिपाहीकी तरह व्यापारी वर्गके लिअे त्यागके अैसे कौनसे प्रसंग आ सकते हैं? अिस पर विनोबाने समझाया:

"व्यापारी वर्गके लिअे अगर त्यागके प्रसंग नहीं होते, तो व्यापारको धर्मका नाम नहीं मिलता। जैसे ब्राह्मण धर्म कहलाता है, क्षत्रिय धर्म कहलाता है, शूद्र धर्म कहलाता है, वैसे वैश्य-धर्म कहलाता। पाकिस्तान होनेके बाद हिन्दुस्तानके व्यापारियोंने, जो खुदको सनातनी समझते थे और मुसलमानोंके साथ जिनकी कोअी खास मैत्री नहीं थी, गलत तरीकेसे पाकिस्तानके साथ व्यापार किया।

"व्यापारी अगर समझ लें कि अुन्हें जो भी व्यापार करना है, निजी लाभकी दृष्टिसे नहीं, देशसेवाके लिअे ही करना है, तो परिस्थिति बदल सकती है। व्यापारियोंको यह समझ लेना चाहिये कि आखिर हमारा मालिक कौन है? मालिक तो किसान है। जब मालिक भिखारी है, तो हम मालिककी अपेक्षा ज्यादा श्रीमंत कैसे बन सकते हैं? और आज धनवानोंकी हालत क्या है? वे अिज्जतदार समझे जाते हैं, सुखी समझे जाते हैं; वे खुद भी अैसा ही मानते हैं, परंतु समाधानका कहीं नाम नहीं। पति-पत्नीमें समाधान नहीं। पिता-पुत्रमें समाधान नहीं। 'पुत्रादपि धनभाजां भीतिः' अैसी अुनकी हालत है। धनवानको अपने लड़केका भी डर लगता है।

"हमारे हिन्दू धर्मका कहना है 'विशः प्रजाः'। सौमें से ९७ वैश्य होने चाहियें, क्योंकि कृषि, गोरक्षा, वाणिज्यकी दृष्टिसे अुत्पादन और विनिमयके कअी काम अुन्हें ही करने पड़ते हैं। शूद्रोंकी संख्या कमसे कम होनी चाहिये। पर आज तो अुल्टा ही हो रहा है। हमने किसानको शूद्र मान लिया है। यह गलत है। वे तो वैश्य ही हैं, क्योंकि अुत्पादनका काम करते हैं। 'मुखिया मुखसो चाहिये, खानपानको अेक'। मुंह अपने लिअे कुछ नहीं रखता, सब अुदरको दे देता है। अुदर भी अपने पास कुछ नहीं रखता। सारे शरीरको दे देता है। यही अर्थनीति व्यापारियोंको मुखिया बना सकती है। व्यापारी महाजन होते हैं। 'महाजनो येन गतः स पंथः'। अिसलिअे महाजनों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। वैश्योंको पीत वर्ण माना गया है। भगवानके वस्त्रका वर्ण वह है। त्यागका वह प्रतीक है। शतहस्तं समाहर सहस्रहस्तं संकिर — सौ हाथोंसे लेना और हजार हाथोंसे देना। जो कुछ लेता है, अुसका दस गुना बनाकर समाजको देता है। फिर लेता है, तो दस गुना बनाकर देता है। यह वाणिज्य है। यह वैश्यधर्म है। अिसमें सारा त्याग ही त्याग भरा है। अिसीलिअे गांधीजीने व्यापारियोंको ट्रस्टी बननेके लिअे कहा।"

वा० मूं०

हमारा नया प्रकाशन

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–४–०

नवजीवन कार्यालय अहमदाबाद–९

विषय–सूची

		पृष्ठ
खतरनाक कदम	कि० घ० मशरूवाला	२२५
पवनार आश्रमकी रिपोर्ट–१	रा० रा०	२२६
रेलगाड़ीमें व्यापार	मगनभाअी देसाअी	२२७
श्री मथुरादासभाअीकी अन्तिम अिच्छा	जीवराज महेता	२२७
गांधीजी और गोवध	कि० घ० मशरूवाला	२२८
मैसूरमें गोरक्षा	गांधीजी	२२९
शिवरामपल्लीमें विनोबा १०-११	दा० मूं०	२३०

www.vinoba.in